चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	22.07.2020	02	03-07

हरे-चारे का साइलेज बनाकर इसकी कमी पूरी कर सकते हैं किसान, सालभर पशुओं को मिलेगा चारा : प्रो. समर सिंह

एचएयू के कुलपति ने किसानों को हरे-चारे की अनुपलब्धता के समय चारे की कमी को पूरा करने का बताया तरीका

भास्कर न्यूज | हिसार

खेती के साथ-साथ किसानों की आमदनी का साधन पशुपालन है। इसके लिए जरूरी है कि पशु को वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा मिलता रहे ताकि किसानों को पशु से अधिक उत्पादन मिल सके। इसलिए हरे-चारे का साइलेज बनाकर पशु को खिलाना एक बेहतर विकल्प है। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि किसान हरे-चारे की कमी के समय पशु को इसका अचार खिलाकर इसकी पूर्ति कर सकते हैं। एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि प्रारंभ से ही पशुधन का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश की कुल जोत के लगभग 4 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही चारा उगाया जाता है जबकि वर्तमान में 12 से 16 प्रतिशत क्षेत्रफल में चारा उगाने की आवश्यकता है। इसलिए हमारे देश में 36 प्रतिशत हरे व 11 प्रतिशत सूखे चारे की कमी आंकी गई है। ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से पशुओं की उत्पादकता कम रही है, जिनमें से एक मुख्य कारण आवश्यक व पौष्टिक आहार का ना मिलना रहा है।

कुलपति प्रो. डॉ समर सिंह।

एचएयू के आनुवांशिकी व पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए सबसे जरूरी है कि उनको वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा दिया जाए। डॉ. डीएस फोगाट के अनुसार साइलेज बनाकर हरे-चारे को लम्बे समय तक रखा जा सकता है जिससे पशुओं के लिए कम खर्च पर उच्च गुणवत्ता का चारा मिल सकता है।

डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कैसे बनता है साइलेज

चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि हरे-चारे को फूल आने के बाद दूधिया अवस्था में काट लेना चाहिए। इस चारे की कुट्टी कर लेनी चाहिए जिसकी लम्बाई एक इंच से ज्यादा न हो। इस चारे में शुष्क पदार्थ 30 से 40 प्रतिशत तक अवश्य होना चाहिए। अधिक सूखे चारे का साइलेज भली प्रकार बंध नहीं पाता और बीच में हवा रह जाने से फफूंदी लग जाती है। इसके अलावा यानी की मात्रा अधिक होगी तो साइलेज सड़ जाएगा। उन्होंने बताया कि साइलेज तैयार करने के लिए गड्ढे की लम्बाई, चौड़ाई तथा गहराई पशुओं की उपलब्धता पर निर्भर करती है। सामान्यतः एक घन फुट जगह में 15 किलो साइलेज आता है। उदाहरण के तौर पर एक गड्ढा जिसकी लम्बाई 10 फीट, चौड़ाई 5 फीट व गहराई 6 फीट हो तो उसमें 50 क्विंटल हरे चारे का साइलेज बनाया जा सकता है।

साइलेज बनाने वाली हरे-चारे खरीफ की फसल को जल्दी काटकर, रबी फसल की बुआई की जा सकती है। साइलेज बनाने से चारे के पोषक तत्वों को नुकसान नहीं होता और अच्छी प्रोटीन वाला चारा तैयार हो जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	22.07.2020	01	06-08

तेज आंधी के साथ जिले में 60 एमएम बारिश, आज भी बरसात की संभावना

शहर में सीवरेज ठप, कॉलोनियों से लेकर सेक्टरों तक में बुरा हाल

भास्कर न्यूज | हिसार

मॉनसून की पिछले तीन दिन से हो रही बारिश में शहर के कई निचले इलाके पानी से लबालब हो गए। सोमवार रात को तेज आंधी के साथ आई 60 एमएम बारिश में कई स्थानों पर बिजली के पोल गिर गए। इसके कारण बिजली गुल हो गई। तेज बारिश में रात में दिल्ली रोड पर भी पानी भर गया। इसके अलावा शहर के महाबीर कॉलोनी, मेला ग्राउंड एरिया, अर्बन एस्टेट, सातरोड एरिया, वार्ड 10 का एरिया, आजाद नगर की गलियों में, कैमरी रोड सहित कई इलाकों में पानी भर गया। कई सेक्टरों में भी बुरा हाल हो गया। जिसमें अर्बन एस्टेट टू व मेला ग्राउंड एरिया शामिल हैं। इन एरिया में सीवरेज ठप रहे।

नॉलेज...अरब सागर से आने वाली हवाएं बरसा रही पानी

एचएयू के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एमएल खीचड़ ने बताया कि दक्षिण पश्चिमी मॉनसून टर्फ रेखा का पश्चिमी छोर हिमालय की तलहटियों से अनुकूल परिस्थितियों के कारण उत्तरवर्ती होने से मैदानी क्षेत्रों की तरफ सामान्य स्थिति में आ गया है परन्तु मॉनसूनी टर्फ रेखा का पूर्वी छोर अब भी पूर्वोत्तर राज्यों की तरफ व हिमालय की तलहटियों की तरफ बना हुआ है। मॉनसूनी टर्फ मैदानी क्षेत्रों की तरफ सामान्य स्थिति में आने से हरियाणा में तीन-चार दिनों से मॉनसून सक्रिय रहा। अरब सागर से आने वाली नमी वाली हवाएं राज्य में ज्यादातर क्षेत्रों में बारिश दर्ज की गई है।

बारिश के बाद पारा 29.6° जो सामान्य से 7 डिग्री कम

मॉनसून की सक्रियता राज्य में 22 जुलाई तक बने रहने की संभावना है परन्तु इसके बाद मॉनसून हवाएं थोड़ी सक्रिय कम होने की संभावना है। ऐसे में राज्य में 25 जुलाई तक उत्तरी हरियाणा के अधिकांश जिलों में में हवाओं व गरज चमक के साथ बीच-बीच में कहीं-कहीं हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है। हिसार में मंगलवार को अधिकतम तापमान 29.6 डिग्री व न्यूनतम तापमान 21.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। अधिकतम तापमान सामान्य से 7 डिग्री व न्यूनतम तापमान सामान्य से 6 डिग्री सेल्सियस कम दर्ज रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	22.07.2020	12	04-08

अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हकृवि के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस ढिल्लो की देखरेख में किया गया। गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों बारे जानकारी दी।

हिसार। वैज्ञानिक-किसान गोष्ठी के उपरांत किसानों को नीम के पेड़ देते वैज्ञानिक।

किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाजरा व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार तथा मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	22.07.2020	04	06-08

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान : कुलपति

बालसमंद अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित

हिसार, 21 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

वन महोत्सव के अवसर पर आयोजित इस गोष्ठी में वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो विशेष रूप से उपस्थित रहे। गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया, जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इनकी औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। गोष्ठी उपरांत सभी किसानों को सामाजिक दूरी रखते हुए नीम के वृक्ष प्रदान किए गए।

वैज्ञानिक-किसान गोष्ठी के उपरांत किसानों को नीम के पेड़ भेंट करते वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	22.07.2020	07	04-05

'लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान'

हिसार, 21 जुलाई (निस)

हकृवि के अनुसंधान फार्म पर आयोजित किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए फार्म प्रभारी डॉ. विरेन्द्र दलाल ने किसानों से पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाने का आह्वान करते हुए कहा कि किसानों के लिए लाभकारी कैर, रोहिड़ा व खेजड़ी वृक्ष को बचाना अत्यंत ही आवश्यक है।

डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे, लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। गोष्ठी उपरांत सभी किसानों को सामाजिक दूरी रखते हुए नीम के वृक्ष प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	21.07.2020	--	--

हकृवि के बालसमंद अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। इसके अलावा किसानों को संबोधित करते हुए चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाजरा व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों के दुधारू पशुओं का दूग्ध उत्पादन् बढ़ जाता है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है। साथ ही ग्वार के बीज का उपचार स्ट्रैप्टोसाइक्लिन से 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर के हिसाब से किया जाना चाहिए जिससे बैक्टिरियल लीफ ब्लाईट को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके अलावा किसानों को बहुउद्देशीय वानिकी पेड़ों की नर्सरी व ट्रांसप्लान्टेशन प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.07.2020	--	--

हकृवि के बालसमंद अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है।

हिसार। वैज्ञानिक-किसान गोष्ठी के उपरांत किसानों को नीम के पेड़ भेंट करते वैज्ञानिक।

किसानों को संबोधित करते हुए चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाजरा व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों के दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन् बढ़ जाता है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाईम्स	21.07.2020	--	--

हरे-चारे का साइलेज बनाकर कमी पूरी कर सकते हैं किसान : वीसी

हकृवि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने किसानों को हरे-चारे की अनुपलब्धता के समय चारे की कमी को पूरा करने का बताया तरीका

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। खेती के साथ-साथ किसानों की आमदनी का साधन पशुपालन है। इसके लिए जरूरी है कि पशु को वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा मिलता रहे ताकि किसानों को पशु से अधिक उत्पादन मिल सके। इसलिए हरे-चारे का साइलेज बनाकर पशु को खिलाना एक बेहतर विकल्प है। उक्त सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि किसान हरे-चारे की कमी के समय पशु को इसका अचार खिलाकर इसकी पूर्ति कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि प्रारंभ से ही पशुधन का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश की कुल जोत के लगभग 4 प्रतिशत् क्षेत्रफल में ही चारा उगाया जाता है जबकि वर्तमान में 12 से 16 प्रतिशत क्षेत्रफल में चारा उगाने की आवश्यकता है। इसलिए हमारे देश में 36 प्रतिशत् हरे व 11 प्रतिशत सूखे चारे की कमी आंकी गई है। ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से पशुओं की उत्पादकता कम रही है, जिनमें से एक मुख्य कारण आवश्यक व पौष्टिक आहार का ना मिलना रहा है।

पशु को साल भर मिलता रहेगा पौष्टिक चारा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी व पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए सबसे जरूरी है कि उनको वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा दिया जाए। हरे-चारे के अभाव में पशु कमजोर हो जाते हैं तथा उनका उत्पादन भी गिर जाता है। यदि पशुओं को पौष्टिक हरा-चारा मिलता रहे तो उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है तथा उनके आहार पर दाना भी कम खर्च होता है। इसलिए मानसून के मौसम में जब भी चारे का उत्पादन अधिक हो तो उसको संरक्षित करके रख लेना चाहिए।

ऐसे बनाया जाता है साइलेज

चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हरे-चारे को फूल आने के बाद दूधिया अवस्था में काट लेना चाहिए। इस चारे की कुट्टी कर लेनी चाहिए जिसकी लम्बाई एक इंच से ज्यादा न हो। इस चारे में शुष्क पदार्थ 30 से 40 प्रतिशत तक अवश्य होना चाहिए। अधिक सूखे चारे का साइलेज भली प्रकार बंध नहीं पाता और बीच में हवा रह जाने से फफूंदी लग जाती है। इसके अलावा पानी की मात्रा अधिक होगी तो साइलेज सड़ जाएगा। उन्होंने बताया कि साइलेज तैयार करने के लिए गड्ढे की लम्बाई, चौड़ाई तथ गहराई पशुओं की उपलब्धता पर निर्भर करती है। सामान्यत- एक घन फुट जगह में 15 किलो साइलेज आता है। उदाहरण के तौर पर एक गड्ढा जिसकी लम्बाई 10 फीट, चौड़ाई 5 फीट व गहराई 6 फीट हो तो उसमें 50 क्विंटल हरे चारे का साइलेज बनाया जा सकता है।

साइलेज के लिए सही हरे-चारे का करें चुनाव

ज्वार विशेषज्ञ डॉ. सतपाल ने बताया कि अप्रैल से जून व नवम्बर-दिसम्बर के महीनों में हरे-चारे की काफी कमी हो जाती है। इसलिए कुछ एहतियात पहले से ही बरतने चाहिए ताकि किसान अपने पशुओं को पूरे वर्ष हरा-चारा उपलब्ध करवा सकें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम, खरीफ व रबी में पशु पालकों के पास फालतू चारे उपलब्ध होते हैं। इसलिए इन दिनों में हरे-चारे को परिरक्षित करके रखा जाना चाहिए जिसे कमी के समय पशुओं को खिलाया जा सके। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि किसानों के पास खरीफ के हरे-चारे, ज्वार, मक्का, बाजरा व लोबिया तथा रबी के मौसम में बरसीम, जई, लुर्सन(रिजका) होते हैं।

यह हैं साइलेज बनाने के लाभ

डॉ. डी.एस. फोगाट के अनुसार साइलेज बनाकर हरे-चारे को लम्बे समय तक रखा जा सकता है जिससे पशुओं के लिए कम खर्च पर उच्च गुणवत्ता का चारा मिल सकता है। साइलेज बनाने वाली हरे-चारे खरीफ की फसल को जल्दी काटकर, रबी फसल की बुआई की जा सकती है। साइलेज बनाने से चारे के पोषक तत्वों को नुकसान नहीं होता और अच्छी प्रोटीन वाला चारा तैयार हो जाता है।

दीवारों व धरातल की गोबर या मिट्टी से करें लिपाई

साइलेज बनाने वाले कच्चे गड्ढे को भरने से पहले उसकी दीवार व धरातल को पूरी तरह गोबर या मिट्टी से लीप देना चाहिए। मिट्टी व हरे-चारे के सीधे सम्पर्क को रोकने के लिए गेहूं का भूसा चारों तरफ व धरातल पर लगा देना चाहिए। हरा-चारा परतों में भरें व प्रत्येक परत को अच्छी तरह दबाना चाहिए ताकि हवा बाहर निकल जाए। ऊपर के भाग में विशेषकर दीवारों के आसपास, साइलेज बनाने की सामग्री को दबा दें। गड्ढे को दो-तीन फीट ऊंचा भरना चाहिए ताकि ऊपर का भाग दबने के बाद भी यह जमीन से ऊंचा रहे। इसके बाद साइलेज को हवा से बचाने के लिए गड्ढा भरने के तुरंत बाद मिट्टी व गोबर से 5-6 इंच तक मोटी परत के द्वारा मुहरबंदी करनी चाहिए। साइलेज 45 से 50 दिनों में बन कर तैयार हो जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाईम्स	21.07.2020	--	--

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान : प्रो. समर सिंह

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए।

कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं।

ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। इसके अलावा किसानों को संबोधित करते हुए चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.07.2020	--	--

भारत में बिमारियों संबंधी रिसर्च में 'लोजिस्टिक रिग्रेशन' विधि का बढ़ रहा प्रचलन : डॉ. परमिल कुमार

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 21 जुलाई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'कृषि आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय उपकरण और तकनीक' विषय पर चल रहे ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स में जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू के डॉ. परमिल कुमार व डॉ. के.के. सक्सेना ने प्रतिभागियों को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित किया। यह जानकारी देते हुए कार्यक्रम की निदेशक प्रोफेसर मंजू सिंह टांक ने बताया कि रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किया जा रहा है। कुलपति के मार्गदर्शन में आयोजित इस तरह के ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स से प्रतिभागियों में रचनात्मकता व सृजनात्मकता बढ़ेगी और उन्हें सांख्यिकी की विभिन्न आधुनिक तकनीकों व सॉफ्टवेयर की जानकारी मिलेगी। रिफ्रेशर कोर्स के बाद प्रतिभागी शोध के आंकड़ों के विश्लेषण में निपुणता हासिल कर पाएंगे। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपूरिया ने प्रतिभागियों से इस रिफ्रेशर कोर्स का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया है। डॉ. परमिल कुमार ने कहा कि भारत में विभिन्न बिमारियों से संबंधित जो भी रिसर्च की जा रही हैं उनमें 'लोजिस्टिक रिग्रेशन' विधि का प्रचलन बहुत अधिक बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि रिसर्च में इस विधि के प्रयोग से परिणाम बेहतर आते हैं और उसी आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण में सही व सटीक हो पाता है। उन्होंने कहा कि इस विधि का प्रयोग करने के बाद जो रिसर्च की जाती है, उसके बेहतर परिणाम आते हैं। उसी आधार पर शोधार्थी अपने शोध पत्र को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध पत्रों में प्रकाशित करवा सकते हैं। रिफ्रेशर कोर्स के दूसरे मुख्य वक्ता चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त डॉ. के.के. सक्सेना ने इक्नोमेट्रिक्स की आधारभूत तकनीकों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, अर्थ प्रबंधन इत्यादि में इन तकनीकों का प्रयोग हो रहा है। उन्होंने कहा कि इन तकनीकों का प्रयोग विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है,

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समरघोष, सिरसा	21.07.2020	--	--

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाने का किया आह्वान

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को दी महत्वपूर्ण जानकारी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें हकृवि के वाइस चांसलर प्रो. समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी गई। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद ग के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसम अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजाति लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधी महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। चारा विभाग से सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाज व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों दुधारू पशुओं का दुग्ध उत्पादन बढ़ जाता है। डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के का ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फस को बोया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समरघोष, सिरसा	21.07.2020	--	--

बिमारियों संबंधी रिसर्च में 'लोजिस्टिक रिग्रेशन' विधि का बढ़ रहा प्रचलनः डॉ. परमिल

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'कृषि आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय उपकरण और तकनीक' विषय पर चल रहे ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स में जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू के डॉ. परमिल कुमार व डॉ. के.के. सक्सेना ने प्रतिभागियों को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित किया। कार्यक्रम निदेशक प्रोफेसर मंजू सिंह टांक ने बताया कि इस तरह के ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स से प्रतिभागियों में रचनात्मकता व सृजनात्मकता बढ़ेगी और उन्हें सांख्यिकी की विभिन्न आधुनिक तकनीकों व सॉफ्टवेयर की जानकारी मिलेगी। कोर्स के बाद प्रतिभागी शोध के आंकड़ों के विश्लेषण में निपुणता हासिल कर पाएंगे। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने प्रतिभागियों से इस रिफ्रेशर कोर्स का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया है। डॉ. परमिल कुमार ने कहा कि भारत में विभिन्न बिमारियों से संबंधित जो भी रिसर्च की जा रही हैं उनमें 'लोजिस्टिक रिग्रेशन' विधि का प्रचलन बहुत अधिक बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि रिसर्च में इस विधि के प्रयोग से परिणाम बेहतर आते हैं और उसी आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण सही व सटीक हो पाता है। उन्होंने कहा कि इस विधि का प्रयोग करने के बाद जो रिसर्च की जाती है, उसके बेहतर परिणाम आते हैं। उसी आधार पर शोधार्थी अपने शोध पत्र को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध पत्रों में प्रकाशित करवा सकते हैं। हकृवि से सेवानिवृत्त डॉ. के.के. सक्सेना ने इकनोमेट्रिक्स की आधारभूत तकनीकों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, अर्थ प्रबंधन इत्यादि में इन तकनीकों का प्रयोग हो रहा है। उन्होंने कहा कि इन तकनीकों का प्रयोग विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है, जिनके परिणाम सटीक होते हैं। उल्लेखनीय है कि गणित और सांख्यिकी विभाग के सहयोग से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा आयोजित इस ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स में एक साथ 160 वैज्ञानिक, शिक्षक और विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। कोर्स में प्रतिभागियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से 'कृषि आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय उपकरण और तकनीक' विषय से संबंधित सात मोड्यूल की जानकारी दी जा रही है। इन मोड्यूल में परिचयात्मक और बुनियादी आंकड़े, बुनियादी सांख्यिकी तकनीक, अग्रिम सांख्यिकीय मॉडलिंग, सांख्यिकीय पैकेज, डिजाइन ऑफ एक्सपरिमेंट्स, सांख्यिकीय जेनेटिक्स व अनुकूलन तकनीक शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समरघोष, सिरसा	21.07.2020	--	--

हरे चारे का साइलेज बनाकर करें इसकी कमी पूरी: प्रो. समर सिंह

हिसार। खेती के साथ-साथ किसानों की आमदनी का साधन पशुपालन है। इसके लिए जरूरी है कि पशु को वर्षभर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा मिलता रहे ताकि किसानों को पशु से अधिक उत्पादन मिल सके। इसलिए हरे-चारे का साइलेज बनाकर पशु को खिलाना एक बेहतर विकल्प है। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि किसान हरे-चारे की कमी के समय पशु को इसका अचार खिलाकर इसकी पूर्ति कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि प्रारंभ से ही पशुधन का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश की कुल जोत के लगभग 4 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही चारा उगाया जाता है जबकि वर्तमान में 12 से 16 प्रतिशत क्षेत्रफल में चारा उगाने की आवश्यकता है। इसलिए हमारे देश में 36 प्रतिशत हरे व 11 प्रतिशत सूखे चारे की कमी आंकी गई है। ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से पशुओं की उत्पादकता कम रही है, जिनमें से एक मुख्य कारण आवश्यक व पौष्टिक आहार का ना मिलना रहा है। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी व पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए सबसे जरूरी है कि उनको वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा दिया जाए। हरे-चारे के अभाव में पशु कमजोर हो जाते हैं तथा उनका उत्पादन भी गिर जाता है। यदि पशुओं को पौष्टिक हरा-चारा मिलता रहे तो उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है तथा उनके आहार पर दाना भी कम खर्च होता है। इसलिए मानसून के मौसम में जब भी चारे का उत्पादन अधिक हो तो उसको संरक्षित करके रख लेना चाहिए ताकि वर्ष भर पौष्टिक चारा मिलता रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	21.07.2020	--	--

कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी की प्रजातियां बचाना आवश्यक : गोष्ठी

हिसार/21 जुलाई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर आज वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस ढिल्लो की देखरेख में किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया। गोष्ठी में बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाजरा व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों के दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन् बढ़ जाता है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत न्यूज	21.07.2020	--	--

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान : डा. दलाल

कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित

हिसार, 21 जुलाई (राज पराशर) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. आरएस ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया, जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डा. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। रामधन सिंह बीज फार्म से डा. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है। साथ ही ग्वार के बीज का उपचार स्ट्रैप्टोसाइक्लिन से 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर के हिसाब से किया जाना चाहिए जिससे बैक्टिरियल लीफ ब्लाईट को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके अलावा किसानों को बहुउद्देशीय वानिकी पेड़ों की नर्सरी व ट्रांसप्लान्टेशन प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गई। गोष्ठी उपरांत सभी किसानों को सामाजिक दूरी रखते हुए नीम के वृक्ष प्रदान किए गए।

वैज्ञानिक-किसान गोष्ठी के उपरांत किसानों को नीम के पेड़ भेंट करते हुए वैज्ञानिक। (छाया : राज पराशर)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाईन (यूनिक हरियाणा)	**21.07.2020**	--	--

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

July 21, 2020 • Rakesh • Hisar Local News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद अनुसंधान फार्म पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी आयोजित

हिसार : 21 जुलाई 2020
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाईन (यूनिक हरियाणा)	**21.07.2020**	--	--

हरे-चारे का साइलेज बनाकर इसकी कमी पूरी कर सकते हैं किसान : प्रोफेसर समर सिंह

July 21, 2020 • Rakesh • Hisar Local News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को हरे-चारे की अनुपल्बधता के समय चारे की कमी को पूरा करने का बताया तरीका

हिसार : 21 जुलाई

खेती के साथ-साथ किसानों की आमदनी का साधन पशुपालन है। इसके लिए जरूरी है कि पशु को वर्ष भर पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा व सूखा चारा मिलता रहे ताकि किसानों को पशु से अधिक उत्पादन मिल सके। इसलिए हरे-चारे का साइलेज बनाकर पशु को खिलाना एक बेहतर विकल्प है। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि किसान हरे-चारे की कमी के समय पशु को इसका अचार खिलाकर इसकी पूर्ति कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाईन (जुल्म से जंग)	**20.07.2020**	--	--

जुल्म से जंग
राष्ट्रीय समाचारपत्र

CATEGORIES | Search this site...

You are here: Home ▸ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति व कृषि मंत्री की कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति व कृषि मंत्री की कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

Posted on July 20, 2020 by Admin |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कृषि मंत्री श्री जे.पी. दलाल की शनिवार को कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई। कुलपति महोदय व कृषि मंत्री की यह मंत्रणा महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय उचानी (करनाल) में हुई। इस दौरान कुलपति महोदय ने कृषि मंत्री श्री जे.पी. दलाल को विश्वविद्यालय में कोविड-19 के मद्देनजर राज्य व केंद्र सरकार के सभी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए चल रही गतिविधियों से अवगत कराया। कुलपति महोदय ने कृषि मंत्री को बताया कि विश्वविद्यालय में कोविड-19 के चलते विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन वेबिनार आयोजित/सेमीनार/प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी हैं।